जीवन घड़ी

अशोक 'मानव'

प्रकाश की गति सबसे तेज है। जब प्रकाश को बह्यमाण्ड के पदार्थ रोकने की क्रिया करते है तो प्रकाश की गति धीमी होते हुए आगे बढ़ती है। जिससे ऊष्मा बनकर हवा रूप में ऊपर जाने लगती है जो आत्मिक रचना बनाकर जीव प्रकाश का निर्माण करता है। इसमें बह्याण्ड के सभी पदार्थ का गुण होता है। प्रकाश के साथ बह्याण्ड के सभी ग्रह नक्षत्रों की ऊर्जा आती रहती है जो आक्सीजन के रूप में जीव प्राणी को मिलती रहती है। जिससे जीव का विकास होता है। प्रकाश से समय चक्र बनता है जो घड़ी की तरह चलता है जिसकी प्रवृति जीव को गतिमान कर जीवन चक्र को पूर्ण करने की होती है और पदार्थ तत्व जिसकी प्रवृति प्रकाश तत्व (समय चक्र) को रोकने की होती है। रोकने की प्रवृति के कारण इसकी ऊर्जा नकारात्मक चक्र बनकर उल्टी घड़ी की तरह चलने लगता है पर जब समय चक्र और नकारात्मक ऊर्जा चक्र एक दूसरे से मिलते है तो दोनो की गति एक दिशा में हो जाती है। जिससे जीवन घड़ी बन जाती है और नकारात्मक ऊर्जा की रूकावटी प्रवृति के कारण से समय चक्र के मिलने से जो घर्षण होता है उससे नकारात्मक ऊर्जा ईंधन की तरह जलता रहता है। जिससे जीवन घड़ी को ऊर्जा मिलती है और वह चलती रहती है, उस घड़ी के चलते रहने से जीवन चक्र का विकास होता रहता है। आत्मिक रचना में जितना ईंधन होता है उसके खर्च हो जाने के बाद जीवन चक्र का एक क्रम पूरा हो जाता है। इसी घड़ी के चलते रहने से जीवन का तापमान बनता है तो मौसम के अनुसार अपना तापमान सामान्य बनाये रखता है। इस घड़ी के चलते रहने से शरीर के हर अंग का विकास होता है और हर अंग गतिमान होते है। दोनो के कारण ही जीव का विकास होता है, प्रकाश को जब तक रूकावट नहीं मिलती तब तक विकास सम्भव नहीं है। इसी प्रक्रिया से प्रकृति का निर्माण होता है और इसकी प्राकृतिक गति बनकर जीव का विकास करती है। जीव अपना शरीर छोड़कर जाते रहते है जिससे पदार्थ का विस्तार होता रहता है। इसी प्रकार बिजली उपकरण भी निगेटिव और पॉजिटिव के मिलने से ही चलते है। गुण गुण की गति को तेज कर देता है जिससे उसकी गति प्राकृतिक नहीं बन पाती है। जब विपरीत गुण आता है तो उसमें रूकावट पैदा होती है जिससे विपरीत गुण ईंधन की तरह जलने लगता है जिससे ऊर्जा तैयार होती है जो विकास करती है और रूकावट के गुण की गति प्राकृतिक हो जाती है जो गुण के अनुसार शरीर का विकास कर एक नये गुण का निर्माण करता है। यह क्रिया निर्माण की आवश्यकता है इसी से जीव का विकास सम्भव और जीव से प्रकृति का विस्तार। पदार्थ का गुण सकारात्मक होता है पर प्रकाश को रोकने की प्रवृति नकारात्मक होती है जिसके कारण उसकी गति उल्टी हो जाती है और